ISSN 2581-9917

तीसरी लड़की

यह कहानी शुरू होती है जब तीसरी लड़की का जन्म हुआ। सबकी नजरें एक लड़के के जन्म का इंतजार कर रही थीं। और जब लड़की का जन्म हुआ तो ओह! एक बार फिर लड़की ही हो गई!!

सबकी आंखें नम थीं। कोई नहीं चाहता था उस लड़की को देखना।

उसके एक साल बाद एक लड़के का जन्म हुआ। एक बहुत शानदार पार्टी मनाई गई। सबकी खुशी का ठिकाना न था।

किस्मत से इस घर के चारो बच्चों को शिक्षा प्राप्त हुई। लेकिन तीनों लड़कियां एक सरकारी स्कूल से पढ़ाई करके आगे बढ़ीं और इकलौता लड़का द्वारका के इंटरनेशनल स्कूल में पढ़ाया गया। जब लड़कियों ने इस भेदभाव को कई जगह महसूस किया तो उन्होंने अपने इरादों को और भी मजबूत कर लिया।

उस तीसरी लड़की ने अपनी मेहनत और लगन से सीबीएसई बारहवीं की परीक्षा में अपने स्कूल में पहला स्थान हासिल किया और शिक्षामंत्री से बधाई पत्र भी प्राप्त किया।

इसी तरह आगे की पढ़ाई में इस लड़की ने हर जगह पहला स्थान पाया। और सीटैट जैसी परीक्षा जिसमें केवल ०.३ प्रतिशत बच्चे ही सफल हो पा रहे हैं, सफलता प्राप्त की। अन्य दोनों लड़कियाँ भी अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद शिक्षक के पद पर पहुँचकर एक अच्छी नौकरी कर रहीं हैं। और अपने भाई की पढ़ाई का खर्च भी अब यही लड़कियाँ देखती हैं, जो कल तक बोझ समझी जाती थीं। पढ़ाई के साथ-साथ वह लड़की इस भेदभाव को मिटाने के लिए अपने एक और सपने को पूरा करने की कोशिश में लगी हुई है और वह सपना है यूपीएससी में चयनित होने का, जिसे वह एक ना एक दिन जरूर पूरा करेगी।

आज इनके पिता का नज़रिया भी बदल गया। पिता के इस नज़रिए को बदलने के लिए इन लड़कियों ने बहुत मेहनत भी की। इस कहानी के माध्यम से केवल यही कहना चाहती हूँ कि एक पिता को अपनी बेटी के जन्म का दु:ख नहीं होना चाहिए और एक बेटी को अपने पिता को गर्व महसूस करवाना चाहिए। क्यूँकि भेद-भाव एक लड़की या लड़के का नहीं होता है, एक इंसान का होता है।

अंत में बस यही कहना चाहती हूँ कि लड़कियां बोझ नहीं होती हैं। यह कहानी उस तीसरी लड़की की ही है जो इस समय मैत्रेयी महाविद्यालय की एक होनहार छात्रा है।

सुधा यादव
बी.ए.–द्वितीय वर्ष
एनसीडब्ल्यूईबी, मैत्रेयी कॉलेज।

(टिप्पणी – मैत्रेयी महाविद्यालय की आन्तरिक शिकायत समिति द्वारा आयोजित कहानी लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत लेख।)